हनुमान चालीसा + आरती

श्री हनुमान चालीसा

(गोस्वामी तुलसीदास कृत)

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि

बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार

बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर

रामदूत अतुलित बल धामा

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा

महाबीर बिक्रम बजरङ्गी

कुमति निवार सुमति के सङ्गी

कञ्चन बरन बिराज सुबेसा

कानन कुण्डल कुञ्चित केसा

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै

काँधे मूँज जनेऊ साजै

शङ्कर सुवन केसरीनन्दन

तेज प्रताप महा जग बन्दन

विद्यावान गुनी अति चातुर

राम काज करिबे को आतुर

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया

राम लखन सीता मन बसिया

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा

बिकट रूप धरि लङ्क जरावा

भीम रूप धरि असुर सँहारे

रामचन्द्र के काज सँवारे

लाय सञ्जीवनि लखन जियाए

श्रीरघुबीर हरषि उर लाए

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं

अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा

नारद सारद सहित अहीसा

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते

कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा

राम मिलाय राज पद दीन्हा

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना

लङ्केश्वर भए सब जग जाना

जुग सहस्र जोजन पर भानू

लील्यो ताहि मधुर फल जानू

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं

जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं

दुर्गम काज जगत के जेते

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते

राम दुआरे तुम रखवारे

होत न आज्ञा बिनु पैसारे

सब सुख लहै तुम्हारी सरना

तुम रक्षक काहू को डर ना

आपन तेज सम्हारो आपै

तीनों लोक हाँक तें काँपै

भूत पिशाच निकट नहिं आवै

महाबीर जब नाम सुनावै

नासै रोग हरै सब पीरा

जपत निरंतर हनुमत बीरा

सङ्कट तें हनुमान छुड़ावै

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै

सब पर राम तपस्वी राजा

तिन के काज सकल तुम साजा

और मनोरथ जो कोई लावै

सोई अमित जीवन फल पावै

चारों जुग परताप तुम्हारा

है परसिद्ध जगत उजियारा

साधु सन्त के तुम रखवारे

असुर निकन्दन राम दुलारे

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता

अस बर दीन जानकी माता

राम रसायन तुम्हरे पासा

सदा रहो रघुपति के दासा

तुम्हरे भजन राम को पावै

जनम जनम के दुख बिसरावै

अन्त काल रघुबर पुर जाई

जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई

और देवता चित्त न धरई

हनुमत सेइ सर्व सुख करई

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा

जय जय जय हनुमान गोसाईं

कृपा करहु गुरूदेव की नाईं

जो सत बार पाठ कर कोई

छूटहि बन्दि महा सुख होई

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा

होय सिद्धि साखी गौरीसा

तुलसीदास सदा हरि चेरा

कीजै नाथ हृदय मँह डेरा

दोहा

पवन तनय सङ्कट हरन मङ्गल मूरति रूप

राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप

श्री हनुमान आरती

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

राम दूत अतुलित बल धामा

अंजनि पुत्र पवनसुत नामा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

महाबीर बिक्रम बजरंगी

कुमति निवार सुमति के संगी

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

कंचन बरन बिराज सुबेसा

कानन कुंडल कुंचित केसा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै

काँधे मूँज जनेऊ साजै

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

शंकर सुवन केसरीनंदन

तेज प्रताप महा जग वंदन

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

विद्यावान गुनी अति चातुर

राम काज करिबे को आतुर

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया

राम लखन सीता मन बसिया

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा

बिकट रूप धरि लंक जरावा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

भीम रूप धरि असुर संहारे

रामचंद्र के काज संवारे

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

लाय सजीवन लखन जियाए

श्री रघुबीर हरषि उर लाए

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं

अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा

नारद सारद सहित अहीसा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते

कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा

राम मिलाय राज पद दीन्हा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना

लंकेस्वर भए सब जग जाना

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

जुग सहस्र जोजन पर भानू

लील्यो ताहि मधुर फल जानू

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं

जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

दुर्गम काज जगत के जेते

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

राम दुआरे तुम रखवारे

होत न आज्ञा बिनु पैसारे

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

सब सुख लहै तुम्हारी सरना

तुम रक्षक काहू को डरना

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

आपन तेज सम्हारो आपै

तीनों लोक हाँक तें काँपै

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

भूत पिशाच निकट नहिं आवै

महाबीर जब नाम सुनावै

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

नासै रोग हरै सब पीरा

जपत निरंतर हनुमत बीरा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

संकट तें हनुमान छुड़ावै

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

सब पर राम तपस्वी राजा

तिन के काज सकल तुम साजा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

और मनोरथ जो कोई लावै

सोई अमित जीवन फल पावै

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

चारों जुग परताप तुम्हारा

है परसिद्ध जगत उजियारा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

साधु सन्त के तुम रखवारे

असुर निकन्दन राम दुलारे

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता

अस बर दीन जानकी माता

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

राम रसायन तुम्हरे पासा

सदा रहो रघुपति के दासा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

तुम्हरे भजन राम को पावै

जनम जनम के दुख बिसरावै

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

अंत काल रघुबर पुर जाई

जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

और देवता चित्त न धरई

हनुमत सेइ सर्व सुख करई

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

संकट कटै मिटै सब पीरा

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

जय जय जय हनुमान गोसाईं

कृपा करहु गुरूदेव की नाईं

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर

आरती कीजै हनुमान ललकी

दुष्ट दलन रघुनाथ कलकी

जय श्री राम

जय बजरंगबली